International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 09 Issue 1 Ser. I || January 2020 || PP 70-74

आधुनिक राजस्थानी चित्रकार

डॉ0 हेमन्त कुमार राय,
एसोसिएट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग,
एम0 एम0 एच0 कॉलेज, गाजियाबाद

राजस्थान की कला अपने आप में विशेष है। जिनके चित्रों का आकर्षण इस प्रदेश के जन जीवन में ही व्याप्त नहीं है, अपितु ये कलाकृतियाँ देश–विदेश के अनेक सार्वजनिक एवं व्यक्तिगत संग्रहालयों में संग्रहित है। गीत, संगीत और चित्रकला का अप्रतिम समन्वय, इन चित्र शैलियों की एक अनोखी विशिष्टता रही है। 20वीं सदी के अन्तर्राष्ट्रीय कला आन्दोलनों के आकर्षण में भारतीय चित्रकारों को भी नई कला से जुड़ने की प्रेरणा मिली। राजस्थान में भी स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् इस नई कला के प्रति आकर्षण बढ़ा ओर यहाँ के चित्रकारों ने अपनी कला को एक नया आयाम दिया। राजस्थान के समसामयिक कलाकारों ने कला में सभी प्रमुख आधुनिक कला शैलियों का प्रयोग करके प्रभावी कलाकृतियों का निर्माण किया। इन कलाकारों में असाधारण परिवर्तनशीलता होते हुए भी इनकी कृतियाँ में पूर्व नियोजित दृष्टिकोण दृष्टिगत होता है।

आधुनिक कलाकारों में मुख्य रूप से देश के जाने–माने चित्रकार गोवर्धन लाल जोशी, भवानी चरण गुई, कृपाल सिंह शेखावत, भूरसिंह शेखावत एवं द्वारका प्रसाद शर्मा ऐसे कलाकारों में से हैं। जिनके चित्रों के प्रति मेरा आकर्षण प्रारंभ से ही था इन कलाकारों ने कला को परिपक्व बनाने का महत्वपूर्ण प्रयास किया है।

राजस्थान की समकालीन कला ने एक क्रमिक व व्यवस्थित विकास किया है। कई बार कहा भी गया है कि राजस्थान में प्रयोगवाद या नएपन को देर से स्वीकृति मिली है। (हेमन्त शेष राजस्थान में आधुनिक कला के पांच दशक, कला दीर्घ, वर्ष–3, अंक 6 अप्रैल 2003) लेकिन राजस्थान ने विशुद्ध कला के आस्वाद को शायद पिछली कई सदियों से पोषित भी किया है।

राजस्थानी आधुनिक कलाकारों गोवर्धन लाल जोशी, भवानी चरण गुई, कृपाल सिंह शेखावत, द्वारका प्रसाद शर्मा एवं भूरसिंह शेखावत के संदर्भ में कलाकारों की कला पर प्रकाश डाला गया है, गोवर्धन लाल जोशी का जन्म 1968 की श्रावणी तीज को उदयपुर के पास कांकरोली में हुआ। बाबा को बचपन से ही यहाँ के चितेरों ने प्रभावित किया और वे भी पाटी मॉडने का कार्य करने में लग गये। बाबा को प्रारम्भिक जीवन में कठिनाईयों का सामना नहीं करना पड़ा बल्कि अपनी कलात्मक अभिरूचि के विकास हेतु उनके समक्ष एक के बाद एक द्वार खुलता सा गया। भील जीवन के अंकन हेतु उन्होंने लगभग सात वर्ष तक भीलों के आचार व्यवहार, वेशभूषा और उनके रहन–सहन को नजदीक से देखा–परखा उनके जीवन की अधिकांश गतिविधियों को तूलिकाबद्ध किया। बाबा देश के ऐसे पहले कलाकार है जिन्होंने किसी जनजाति का इतना गूढ़ और विस्तृत अध्ययन करके कैनवास पर उसकी सौन्दर्यमयी झाँकियाँ प्रस्तुत की है। भीलों के अतिरिक्त इन्होंने बंजारों, लुहार, किसानों, गड़रियों और श्रमिकों को विभिन्न प्रकार की भंगिमाओं में प्रदर्शित किया है। वही राजस्थान के महान कलाकारों में भवानी चरण गुई का नाम भी विख्यात है। भारतीय चित्रकला के पुनर्जागरण काल से लेकर आधुनिक कला आन्दोलन की लगातार साक्षी देने वाले इस कला साधक ने विभिन्न दशकों में परिवर्तित होने वाली भिन्न–भिन्न भारतीय चित्र शैलियों का निर्माण किया है।

सन् 1910 में वाराणसी के एक बंगाली परिवार में जन्में चित्रकार भवानी चरण गुई के सरल व्यक्तित्व को देखकर किसी को यही नहीं लगता कि वे वास्तव में चित्रकला के मर्म को एक बहुत गहरे स्तर पर पकड़े हुए है। स्कूल में आपने पोट्रेट पेन्टिंग, व्यक्ति चित्रण और एचिंग के क्षेत्र में विशेष दक्षता हासिल की इनमें छाया तथा प्रकाश, गहरे और हल्के रंगों से शारीरिक अंगों का उठान तथा सूक्ष्म मांसपेशियों का उभार अपनी सुघड़ कलम से चित्रकार ने दर्शाया है। इसी अर्सें में धार्मिक यात्राओं और ग्राम्यदृश्यों को भी आपने अपनी कूची का आधार बनाया इसमें केदारनाथ की राह पर, 'ग्राम्यदृश्य' सूखी घास आदि प्रमुख शीर्षक है। जिन्हें सर्वत्र सराहना मिली है। रेखाएँ कोमलता से बँधी है तथा विषयों का निरूपण अपनी सहज गम्भीरता के साथ हुआ है। संगीतकार, शकुन्तला, रासलीला, सरस्वती और लक्ष्मी के चित्र इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है। जिनमें कलाकार की सूक्ष्म रंग दृष्टि अंकन कुशलता, श्रम तथा संरचना के प्रति कलात्मक जागरूकता के दर्शन होते है।

राजस्थान की युवा पीढ़ी यहाँ के रंग एवं प्राकृतिक छटा से प्रभावित है। जिसको वे मूर्त तथा अमूर्त रूपकारों के माध्यम से अपने फलक पर संयोजित कर रहे है। उनमें राजस्थान के वरिष्ठ चित्रकार कृपाल सिंह शेखावत की

जगह अलग है। उनकी समूची कला इसी बात को साफ करती जान पड़ती है कि परम्परागत कलाओं के मूल्य किसी भी काल–खण्ड में कलात्मक मंतव्यों के लिए रचनात्मक ऊर्जा के तौर पर ग्रहण किए जा सकते हैं।

कृपाल सिंह शेखावत का जन्म 11 दिसम्बर सन् 1922 को राजस्थान के शेखावाटी के क्षेत्र के एक गांव मऊ में हुआ बचपन में इन्होंने तस्वीरे मांड़ते ग्रामीण कलाकारों, लाख का काम करते मणिहारों, पीतल की ढलाई करते कारीगरों और लकड़ी का काम करते बढ़ाई को नजदीक से देखा। श्री कृपाल सिंह शेखावत ने नन्दबाबू के चरणों के बैठकर सम्यक रूप से चित्रण का अभ्यास किया और तब वे अपना मार्ग ढूंढने लगे। कृपाल सिंह शेखावत को राजस्थान की धरती का चितेरा कहा जा सकता है। जिनके काम की जड़े राजस्थान के इतिहास, कला और संस्कृति की जमीन में गहरी उतरी हुई है। उनकी अनेक कृतियाँ राष्ट्रीय संग्रहालय और केन्द्रीय ललित कला अकादमी सहित देश विदेश के कई कला संग्रहों में स्वीकृत हुई। आज अपनी कलात्मकता और आकर्षक छटाओं के कारण ही 'कृपाल कुंभ' के बर्तन सारी दुनिया के हस्तशिल्प बजारों में एक नीली छटा की तरह छा गये है। कृपाल सिंह शेखावत चित्रकला में पुनः पूरी तरह रमजाने के लिए सम्भवतः स्थाई रूप से जयपुर छोड़कर शेखावटी के लिए प्रस्थान करना चाहते है। वह मंडावा में रहकर केवल चित्रों और चित्रकला की अपनी उसी जानी पहचानी दुनिया में डूब जाना चाहते है। जो नीली पॉटरी के कारण उनसे छूटी तो नहीं थी बल्कि कुछ दूर जरूर हो गई है।

श्री द्वारका प्रसाद का कलाकार अपने दार्शनिक घेरे से हटकर जनमानस का प्रतिनिधित्व करता है। वे अपने चित्रों में जो भी चित्रण प्रस्तुत करते है। वह विश्व के विभिन्न 'मानस' द्वारा भोगा जाने वाला सुख–दुख प्रेम घृणा, दुष्टता, क्रोध, सुकर्म कुकर्म आदि मानसिक एवं पाश्विक प्रवृत्तियों के मध्य ही है। जिसे वे अपने सामने घटित होना यथार्थ रूप में देखते है एव महसूस करते हैं। तत्पश्चात् उनको अपने चित्रों एवं रेखांकनों में अभिव्यक्त करते हैं। यथार्थ चित्रण के साथ–साथ श्री द्वारका प्रसाद ने समसामयिक कला में उभरे विविध वादों को भी प्रयोगात्मक रूपों में स्वीकार किया गया है एवं श्रेष्ठ चित्रों का निर्माण किया गया है।

भूरसिंह शेखावत राजस्थान में यथार्थवादी चित्रकला के एक सशक्त स्तम्भ थे। उनका सृजन राजस्थान के जनजीवन के अनेक चित्र उपस्थित करता है। उन्होंने राजस्थान के सामाजिक जीवन में गहरे पैठ कर अपने रेखाचित्रों व माध्यम से विशद अध्ययन किया तथा उसे अपनी अभिव्यक्ति की शक्ति से दर्शकों के सामने अत्यन्त समृद्ध रूप में प्रस्तुत किया था।

गोवर्धन लाल जोशी बाबा ने कांकरौली के द्वारकाधीश मन्दिर में भित्ति–चित्रों व पिछवाई चित्रों को देखकर आपका मन भी चित्रण हेतु भटकता था रेखात्मक आकृतियों का अभ्यास करते हुए अनगिनत रेखांकन किए तीव्र धूप, वर्षा, सर्दी, प्रत्येक मौसम में उदयपुर के समीपवर्ती ग्रामों कस्बों में जाकर आदिवासी भीलों के रेखाचित्र बनाये है। भीलों के अतिरिक्त बनजारों, गाडिया, लुहारों, गड़रियों के रेखांकन भी किए। आपके चित्र वर्णनात्मक रहे जिनमें गणगौर की सवारी, जौहर, ज्वाला, पन्नाधाय, राणा प्रताप विशिष्ट है।

राजस्थान के महान कलाकारों में द्वारका प्रसाद शर्मा अपना कला कर्म आरम्भ करने से पूर्व अपने गुरूजनों का स्मरण करके, अपनी कला साधना हेतु आसन ग्रहण करते हैं।

पारम्परिक चित्रण हेतु द्वारका जी स्वयं उसका धरातल तैयार करते हैं। चाहे वह चित्र कागज या कपड़े पर निर्मित होता है। आपने सूती कपड़े पर बड़े आकार 6 × 4 जैसे पारम्परिक चित्रों को चित्रित किया। जो अपने आप में अद्‌भुत है। इन चित्रों में गणेश विवाह, शिव बारात, अश्वरथ, आरूढ सूर्य एवं नेमिनाथ जी का विवाह आदि प्रमुख चित्र है। चित्र में स्थापत्य को भी सुन्दर रूप प्रदान किया है। जिसमें मेहरावे, जालिया झरोखे, गुम्बद व विशाल प्रांगण में वाध बजाते लोग, विवाह की शोभा यात्रा में सैकड़ों नर नारियों की भीड़, हाथी, घोड़े, रथ, पालकियों का जमाव स्थापित करना बहुत ही सिद्ध हस्त कलाकार के अतिरिक्त किसी अन्य के वश की बात दिखाई नहीं देती। आपकी कृति केश सज्जा में कृष्णा राधा के केश अपने हाथों से बना रहे हैं। चारों तरफ प्रकृति का सुन्दर वर्णन किया गया है। समस्त कृति गोल आकृति में बनाई गई है। आयु और कला साधना दोनों दृष्टियों से परिपक्व, वरिष्ठ चित्रकार बी0सी0 गुई के सरल व्यक्तित्व को देखकर किसी को यह नहीं लगता कि वे वास्तव में चित्रकला के मर्म को एक बहुत गहरे स्तर पर पकड़े हुए है। इन्होंने यूरोप के विभिन्न देशों में भ्रमण करके वहाँ की कला परम्परा तथा लोगों के रहन–सहन का अध्ययन किया। स्लेड स्कूल में आपने पोट्रेट पेन्टिंग, व्यक्ति चित्रण और एचिंग के क्षेत्र में विशेष दक्षता हासिल की। महाराणा प्रताप, पृथ्वीराज चौहान, महात्मा गांधी, महारानी गायत्री देवी, तथा अन्य नरेशों एवं महापुरूषों के पोट्रेट आपके इस अनुभव के कुछ प्रमाण है। यह पोट्रेट ठेठ ओल्ड मास्टर्स की यथार्थवादी शैली में बनाए गए है। विभिन्न भारतीय पुरा कथाओं एवं प्रचलित जन श्रुतियों को विषय बनाकर इन्होंने इस अर्से में बहुत से प्रभावशाली चित्रों का निर्माण किया 'रासलीला, प्रतीक्षा', शिव–ताण्डव, राधा–कृष्ण, मीरा का विषपान, कालिदास, बुद्ध का निर्वारण, बुद्ध विरक्ति, लक्ष्मी का उदय आदि उन चित्रों के शीर्षक है। इनमें केदारनाथ की राह पर, ग्राम्यदृश्य, सूखी घास आदि प्रमुख शीर्षक है। जिन्हें सर्वत्र सराहना मिली है।

राजस्थान के प्रसिद्ध कलाकार कृपाल सिंह शेखावत ने जापान से स्वदेश लौटने के पश्चात् तीन वर्ष की अवधि में नई दिल्ली स्थित बिड़ला हाउस में ''गांधी जीवन दर्शन'' पर एक विशाल भित्ति चित्र अंकित किया। वर्ष 1960 में इन्होंने पश्चिमी रेलवे के अनुरोध पर जयपुर के रेलवे स्टेशन भवन की प्रमुख दीवार पर 30 फीट लम्बा और 8 फीट चौड़ा एक फ्रैस्कों म्यूरल भी बनाया। जिसमें स्थानीय ''गणगौर'' का त्यौहार और सवारी बहुत कुशलता से चित्रित किया गया है। कृपाल सिंह जी की अपनी निजी कार्य शैली में वैसे तो टेम्परा के अलावा वाश पद्धति का प्रयोग अधिक हुआ है, लेकिन आपके चित्र टेम्परा के अलावा वाश पद्धति, जल रंग, भित्ति चित्रण एवं ऐग टेम्परा, लिथोप्रिंट आदि ऐसी कई आपकी चित्रण पद्धतियाँ रही है। बाबा के चित्रांकन की एक विशेष तकनीक फ्रेस्को भी रही है इस विधि में ताजी गीली दीवार पर खनिज रंगों के माध्यम से ही चित्रांकन करना होता है यह तकनीक भित्ति चित्रण में स्थाई विधि है। इस तकनीक में बाबा द्वारा किया चित्रांकन जयपुर रेलवे स्टेशन की एक भित्ति पर वृहदाकार में बना हुआ नौका विहार विषय का चित्रण है। वाश टैम्परा व जल रंग विधि को अपनाकर अपनी कला यात्रा की निरन्तरता को बनाए रखा पर बाबा के अधिकांश चित्र कागज या कपड़े पर टैम्परा पद्धति से बने हुए है मूल रूप से टैम्परा विधि को ही अपने चित्रों का माध्यम बनाया। कागज पर तथा कपड़े को पटल पर चिपका कर जल रंग व टैम्परा विधि से चित्रण करना इनकी शैलीगत पहचान के साथ इनकी माध्यमगत अभिरूचि को रेखांकित करता है।

गुई के अब तक के अधिकांश चित्रों का माध्यम जलरंग है। रेखाओं की सुस्पष्टता और सुघड़ता पर इनका विशेष आग्रह रहा है। उनके रंग चमकीले या भड़कीले नहीं हैं बल्कि आँखों को शीतलता देने वाली रंग योजना को ही इन्होंने सर्वत्र अपनाया है। इनके चित्रों का मूल उद्देश्य सौन्दर्य बोध है और उनका मर्म अलंकार। इनके चित्रों में सघनता है। जल रंगों के माध्यम से यह दैनन्दिन भारतीय जीवन–दृश्यों को कूचीबद्ध करते रहे है। यूरोप यात्रा के पश्चात् गुई ने दृश्यचित्रों के निरूपण के लिए तैल रंगों के माध्यम को अपनाया और वे पेटिंग नाइफ से पैच पद्धति द्वारा चित्र निर्माण करने लगे।वही राजस्थान के प्रसिद्ध कलाकार द्वारका जी ने अपने जीवन काल में असंख्य कलाकृतियों की मौलिक रचना की द्वारका प्रसाद जी के द्वारा परम्परागत शैली के अन्तर्गत शिव बारात का चित्र भी बड़ा ही अद्भुत है। यह चित्र 3×4 साईज के कपड़े पर निर्मित है। इस चित्र में शिव अपने गणों के साथ जिनमें गणों का विविध रूपों में दृष्टव्य है। ग्राम जीवन के कुशल चितेरे भूरसिंह शेखावत ने ऐसी झाकियाँ प्रस्तुत की जिनमें राजस्थान के कार्यनिरत आकृतियों की हूबहू छवियाँ मुखरित हुई। आप व्यक्ति चित्र को एक मिनट में ही बना लेते थे। उन्होंने गाँधी जी के साथ प्रवास के दौरान उनके जीवन की अनेक झाकियाँ चित्रित की है। राजस्थान के प्रसिद्ध कलाकारों में जहाँ गोवर्धन लाल जोशी भीलों के चित्रण के लिए विश्वविख्यात है। वही कृपाल सिंह शेखावत ब्लू पोटरी व भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है। ऐसे ही महान कलाकारों में भवानी चरण गुई ने पोर्ट्रेट पेंटिंग एवं ऐचिंग में विशेष दक्षता हासिल की इन्होंने ऐतिहासिक लोगों के व्यक्ति चित्र बनाये जो ठेठ ओल्ड मास्टर्स की यथार्थवादी शैली में थे। राजस्थान की रंगीली जीवन शैली तथा पाश्चात्य चित्रण का अनूठा संगम आपकी भावभिव्यक्ति का प्राण रही है। वही भूरसिंह शेखावत राजस्थान में यथार्थवादी चित्रकला के एक सशक्त स्तम्भ थे। उनका सृजन राजस्थान के जनजीवन के अनेकों चित्रों को उपस्थित करता है। ग्राम जीवन के कुशल चितेरे भूरसिंह शेखावत ने ऐसी झाँकियाँ प्रस्तुत की जिनमें राजस्थान के कार्य निरन्तर आकृतियों की हुबहु छवियाँ बनी हुई है। चक्की चलाते, आटा गूँधते, सूत कातते एवं देश की महान, विभूतियों के चित्रों में गाँधी पटेल, बहुत से देश भक्तों से जुड़ी विभूतियों को इन्होंने रेखांकित किया था। शेखावत जी ने विभिन्न वर्गों और व्यवसाय में नर नारियों का सूक्ष्म अध्ययन करके कार्यरत स्त्री पुरूषों को अपने चित्रों का विषय बनाया। वही द्वारका प्रसाद शर्मा जी राजस्थान के इन वरिष्ठ कलाकारों में से थे, जो नवीन रूपों के निर्माण में सक्रिय रहे। वैसे भी आपकी निजी विशेषता आपके

द्वारा चित्रित व्यक्ति चित्रों में पाई गई है। कृपाल सिंह जी को ढेरों सम्मान ओर पुरस्कार मिले। भारत सरकार द्वारा पद्मश्री, राजस्थान ललित कला अकादमी के सर्वोच्च कलाविद् तथा 1957 से 1951 तक लगातार राजस्थान ललित कला पुरस्कार मिले। कृपाल सिंह शेखावत जी ने वॉश एवं टेम्परा पद्धतियों में बहुत चित्र बनाये एवं लघु चित्रण शैली के साथ ही भित्ति चित्रों का भी चित्रण किया जोकि बहुत ही प्रसिद्ध है।

राजस्थान की कला समय के साथ, इतिहास के प्रभावों को आत्मसात् करती हुई बदलती चली गई और अपना स्वतन्त्र अस्तित्व प्राप्त करन में समर्थ हुई। प्रत्येक युग ने यहाँ की कला को एक विशिष्ट शैली और रूप प्रदान किया गया। यह कला परम्परा राज्य के असंख्य कलाकारों के सतत् प्रयासों का परिणाम है। जिन्होंने समय–समय पर आये कला आन्दोलनों व नये प्रयोगों से आये परिवर्तनों को अपनाया। यहाँ की समसामयिक कला कृतियाँ, बौद्धिक स्तर पर अपने प्रयोगों में निश्चित रूप से उत्कृष्ट और चर्चित रही है। शांति निकेतन से ही दीक्षित कृपाल सिंह शेखावत, देवकीनन्द शर्मा एवं गोवर्धन लाल जोशी ने भी इस कला परम्परा को जीवित रख अपनी चित्रकृतियों में नवीन कार्य किया। कृपाल सिंह शेखावत के चित्रों में रंग संगीत व आलंकारिक गुणों का आकर्षण

विद्यमान है। समतल रंगों में चित्रित उनके चित्रों की रंगबिरंगी पृष्ठभूमि में चंचलता होते हुए भी प्रकाश वातावरण या गहराई का आभास नहीं है। इनके चित्रों पर जापानी कला का भी प्रभाव है। जिसके कारण वे समतल रंगों के क्षेत्रों को बाह्य रेखा से अंकित करते है एवं पृष्ठभूमि के रंगों और आकारों की छटाओं में स्पष्ट विरोध रख के संयोजनपूर्वक चित्रण करते हैं।

गोवर्धनलाल जोशी ने मेवाड़ के भील जनजाति के सरल जीवन को चित्रित किया। इनके चित्रों में पृष्ठभूमि को या तो एक ही सपाट रंग द्वारा भरा गया है। या आकृतियों के विरोध रंग स्थान–स्थान पर भरे गये है। इस कारण इन चित्रों में असाधारण चटक उत्पन्न हो गयी है।

बीसवीं सदी के वरिष्ठ राजस्थानी चित्रकारों में नवीन स्फूर्ति एवं नव विचार जरूर आये किन्तु व चित्रांकन परम्परा में कही न कही पारम्परिक कला से जुड़े रहे। किन्तु युवा चित्रकारों का मन पारम्परिक शैलियों, यूरोपियन अकादमिक शैली एवं बंगाल स्कूल से न बहल सका। इन कलाकारों के सामने दो ही विकल्प रह गये–या तो वे आधुनिक कला धारा को अपनाये या प्राचीन शैलियों का अध्ययन कर उसे नया रूप प्रदान करें।

राजस्थान के समसामयिक कलाकारों के एक वर्ग ने यहाँ की परम्परागत चित्र शैलियों व लोक कला को निरन्तर प्रदान करने हेतु, बीसवीं सदी की कला के नवीन तथ्यों और प्रयोगों से उपजी आधुनिकता का इनमें समावेश कर, अपनी चित्र कृतियों को समसामयिक, नव परम्परावादी चित्रण शैली के रूप में प्रतिष्ठित किया। इन नव परमपरावादी चित्रकारों ने प्राचीन शैलियों के चाक्षुष सौन्दर्य से अभिभूत होकर अपने चित्रों में इन कलाशैलियों के मूल तत्वों को आधुनिक संयोजन के साथ प्रस्तुत किया।

राजस्थान के समसामयिक कलाकारों ने अपनी कला में सभी प्रमुख आधुनिक कला शैलियों को प्रयोग करके प्रभावी कलाकृतियाँ का निर्माण किया। इन कलाकारों की असाधारण परिवर्तनशीलता के बावजूद इनकी कृतियाँ पूर्वनियोजित दृष्टिकोण से बनायी गयी है, जो स्वयं प्रेरित है। राजस्थान की युवा पीढ़ी के अनेक कलाकार नवीन माध्यमों और रूपाकारों की खोज के साथ–साथ नये प्रयोगों एवं नव कला धाराओं से जुड़े, रचनाकर्म कर रहे है। राजस्थान की इस आधुनिक कला के प्रति आकर्षण बढ़ा और यहाँ के चित्रकारों ने अपनी कला को एक नया आयाम दिया। भूरसिंह शेखावत, कृपाल सिंह शेखावत, गोवर्धन लाल जोशी, बी०सी० गुई, द्वारका प्रसाद शर्मा इत्यादि कलाकार नवीन कला प्रयोगों से जुड़े और अपनी चित्रकृतियों में आधुनिक तकनीक और समकालीन तत्वों का समन्वय स्थापित किया।

राजस्थान के प्रत्येक कलाकार का कार्य ही अपनी कला के कारण विशिष्ट और महत्वपूर्ण है। इन सभी कलाकारों के कार्य का गहनता से अध्ययन करने के पश्चात् यह ज्ञात हुआ कि प्रत्येक कलाकार की विषय वस्तु प्रकृति, पौराणिक व ऐतिहासिक ये तीनों ही गुण विद्यमान है। तो वही उनके कार्य करने की शैली में तकनीक पक्ष पर विभिन्नता अपनाते हुए भी कार्य में भारतीय कला पक्ष की समानता देखने को मिलती है। संदर्भित कलाकार अपने प्रत्येक कार्य में भारतीय कला की छाप छोड़ते हुए दिखता है। कलाकारों की विशिष्ट कलाकृतियों में भारतीय कला का पुट साफ छलकता दिखाई देता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

- शर्मा, कालूराम एवं व्यास, प्रकाश, राजस्थान का इतिहास, जयपुर, 2001
- शर्मा, देवकीनन्दन, कला में नये स्वरूप, अभिनन्दन, ग्रन्थ, (रामगोपाल विजयवर्गीय), जयपुर, 1991
- शर्मा, देवदत्त, परम्परा और प्रवृति का यथातर्वादी चितेरा सागर, राजस्थान सूजस संचय, जयपुर, 1998
- शर्मा भवानीशंकर, कला के बदलते संदर्भ, रूपांकन, जयपुर, 1995
- शुक्ल प्रयाग, विद्यासागर उपाध्याय काल रंग के साथ एक यात्रा, दस समसामयिक कलाकार, जयपुर, 1990
- शेष, हेमन्त, राजस्थान की समकालीन चित्रकला, रूपांकन, जयपुर, 1995
- शर्मा द्वारका प्रसाद, 1976 ई0 द्वारक प्रसाद शर्मा के निजी संग्रह से जयपुर (राज.)।
- राजस्थान में आधुनिक कला के पाँच दशक हेमन्त शेष, अप्रैल, 2003
- भारद्वाज विनोद, समकालीन कला : समस्याएँ एवं संभावनाएँ, अक्टूबर, 2001
- भटनागर शेफाली, भारतीय आधुनिक, चित्रकला में सामाजिक संदर्भ, अप्रैल, 2001

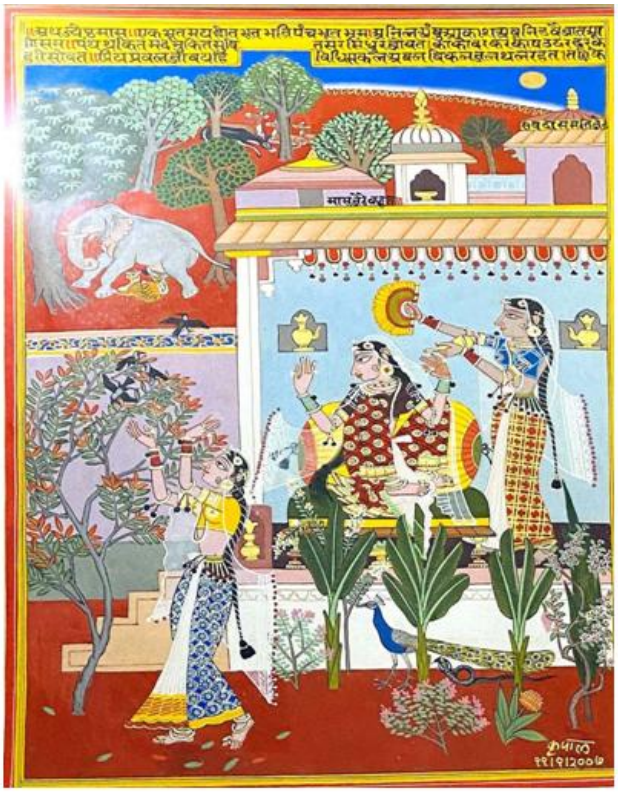

शंभो